

विचार बिन्दु

कोई भी भाषा अपने साथ एक संस्कार, एक सोच, एक पहचान और प्रवृत्ति को लेकर चलती है। – भरत प्रसाद

हिन्दी भाषा को लिंक भाषा के रूप में अनिवार्य करने की आवश्यकता

दे

श सप्राट अशोक के शासन काल में एक बहुत देश बन गया था जिसकी सीमाएं पूर्व में म्यांगार, श्री लंका, अफगानिस्तान, कश्मीर, गिरिहां, नेपाल भूटान आदि अनेक राज्य उसका हस्ता थे। इस बात के प्रमाण अभी भी अनेक देशों में मिलते हैं। भाषा सदैव जिल रही है बल्कि प्रति पचास मील पश्चिम बोली बोल जाती है। भाषा सदैव जिल रही है अतिरिक्त संस्कृत सभी प्राचीनों में बोली और तिनिलक बार शस्त्र रखना में सुख भूमिका निभाती थी। कालान्तर में अनेक कारणों और बदलती परस्तियों ने इन भाषाओं का प्राय लाप होता गया... और सही व्याकरण न बन पाने से विदेशी आकारों द्वारा कारबी, अरबी, उर्दू आदि भाषाओं और बोलियों का प्रादुर्भाव इनका बढ़ा कि राज काज भी इन्ही भाषाओं में होने लगे... मध्य कालीन भारत में कठिन युद्ध कुछ दिनों साहित्यकारों ने हिंदी (देवनागरी) का सुनाम कर याकरण के नियम बना कर सुधूर भाषा का निर्माण अरम्भ किया। आज हम देख रहे हैं कुछ राष्ट्रों में हिंदी के प्रति दुर्भाव चमत्कर तक बढ़ गया है विश्व भारत और बंगाल में सब राज्य अपनी लोकल भाषा को राज्य की भाषा का दर्जा देने की बकालत कर अंदोलन तक कर रहे हैं। उन्हें जान होना चाहिए कि इनके बढ़े और सभी भौगोलिक परस्तियों के रहते तथा सामाजिक परम्पराओं के चलते जब तक एक कोई भाषा जिक्र भाषा नहीं बनी राज्यों के अपने में व्याकरण और आम जिल रखता और विविध सामग्री नहीं होने वाला विनायक और सब्दाव की बोली खलेगी। समाजों से सामग्री नहीं होने से द्वेष, विवरण, कलेश बढ़ाकर समाज अनेक समूह में बढ़ जायेगा और यह स्थिति संभवतः राजनीतिक लोगों को भी मुश्किल न देती है।

शिक्षित और जागरूक समाज इस समस्या पर गहन विचार कर, साथ निकलने पर फिर छहताते क्या होते 'जब चिड़ियां चुंग गयी खीं' उदाहरण कर समाने हैं। राजन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, श्रीलंका, बांगला, नेपाल आदि संघीय देशों के संघीय दोनों से बाहर हैं। बंगाल, और बांगला देश भी दुर्टांग, क्योंकि वहां धर्म आधारित द्वेष चरम पर है। हिन्दू और दिनदिवारी भाषी लोग वहां के एक विशेष धर्म को सुहाने नहीं, इससे वहां इन लोगों को असुरक्षा की भावना बढ़ गयी है। वहीं कटूत के बढ़ते प्रशाप से संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो चुकी है। बंगाल में तो केंद्र को बहुत पहले ही राष्ट्रपति शासन लागा देना विचारित होता है। चरम सीमा होने पर जाति उत्पन्न होती है उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार बीत जाने का बोध रहता है अन्य घटनाओं में कोई राजनीतिक आदमी नहीं वैठता। संघर्ष: केंद्र में बैठे नेता ही रखते हैं।

देश में आग सुना रही है लोग सभी तरह से असंतुष्ट हैं अभी कोई बोल नहीं रहा है। बल्कि कहती है कि जातियों खंड में चुकी है तो फिर, ऐसी ऐसी, ऐसी, ऐसी, बैकर्बै, आदि क्या जातियाँ नहीं हैं? सकार जनता को क्या विकेचाहीन समझती है? आम चुनाव के समय जातियों समीकरण और संभाल योग्यांशों चुनाव से लेकर मंत्री बनने तक प्रक्षय प्रति दर्शक रूप से जातियों खंड में रह रहते हैं। देश के सभी नेता अभी स्वभावित अवस्था में हैं उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार बीत जाने का बोध रहता है अन्य घटनाओं में बदलता है। जिसके लिए उन्हें विदेशी से ही अधिक संघर्ष बढ़ाव देता है।

खैर, ऐसी बातें सभी जानें रहते हैं लेकिन चुप रहते हैं। शायद पार्टी भय या अन्य कोई लालसा नहें चुप रहने के लिये आत्मीय बल देता रहता है। शायद पार्टी भय या अन्य कोई अनिवार्य करना चाहिए, तदुपरांत संस्कृत, अंग्रेजी, ब्रज, अवधी, मलयालम, कन्नड़ आदि अलग से पाठ्यक्रम में छात्रों की रुचि के अनुसार जानता की जिम्मेदारी और सामाजिक परस्तियों को देखते हुए, संघीय दोनों से केरल, महाराष्ट्र, मिजाराम, लेलगांव, पंजाब, कर्नाटक, बंगाल आदि कुछ राज्यों के चलते स्वतंत्र देश बन गए, उन्हें पूर्व भी ये सभी अलग ही थे। इसलिए मेरी अंतरामा विभिन्न परस्तियों से सेकेते दे रही है कि विदेश प्रक्रिया प्रति दर्शक है, उनके लिए कागज भी अपने अपने बातें ही हातांक करना का कारबी जो बनने में योगदान होता है। चरम सीमा होने पर जाति उत्पन्न होती है उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को बदलता है। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार रसेंस के संलग्न होकर उस सुनाम के अंदर भी योग्य अन्य जलशील पदार्थ डाल कर असंतोष को भड़ाता है। जिसके लिए उन्हें विदेशी भाषाएँ सीख सकता है, भविष्य में ये उसके काम आ सकती है।

ऐसे कामी नहीं होते कि देश पूर्व में विदेशित हुए नहीं है। सोवियत संघ का उदाहरण अभी धृति ही है। शायद राष्ट्र वर्षों तक ही संघीय बना रहा है रही दशाएं और भीड़िया पर उपरांत साम्राज्य के आधार पर मेरी ये सोच बनी रही है। और भजूब भूमिका निभाती है। इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और विदेशी नीतियों में अभी तक सफल ही रहे हैं, कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार से लाभ देती हैं। इसके लिए उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को भड़ाता है। जिसके लिए उन्हें विदेशी से ही अधिक संघर्ष बढ़ाव देता है।

खैर, ऐसी बातें सभी जानें रहते हैं लेकिन चुप रहते हैं। शायद पार्टी भय या अन्य कोई लालसा नहें चुप रहने के लिये आत्मीय बल देता रहता है।

यह सब नियतों के लिए मेरे पास काहे भी प्रसार नहीं है कि केवल धृति हो सकता है मेरी सोच और धर्म विषय में गान्धी और अन्य जानता का जिल रहता है। और काजीनिक और सामाजिक परस्तियों को देखते हुए, संघीय दोनों से केरल, महाराष्ट्र, मिजाराम, लेलगांव, पंजाब, कर्नाटक, बंगाल आदि कुछ राज्यों के चलते स्वतंत्र देश बन गए, उन्हें पूर्व भी ये सभी अलग ही थे। इसलिए मेरी अंतरामा विभिन्न परस्तियों से सेकेते दे रही है कि विदेश प्रक्रिया प्रति दर्शक है, उनके लिए कागज भी अपने अपने बातें ही हातांक करना का कारबी जो बनने में योगदान होता है। चरम सीमा होने पर जाति उत्पन्न होती है उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को बदलता है। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार से लाभ देती हैं। इसके लिए उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को भड़ाता है।

ऐसे कामी नहीं होते कि देश पूर्व में विदेशित हुए नहीं है। सोवियत संघ का उदाहरण अभी धृति ही है। शायद राष्ट्र वर्षों तक ही संघीय बना रहा है रही दशाएं और भीड़िया पर उपरांत साम्राज्य के आधार पर मेरी ये सोच बनी रही है। और भजूब भूमिका निभाती है। इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और विदेशी नीतियों में अभी तक सफल ही रहे हैं, कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार से लाभ देती हैं। इसके लिए उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को भड़ाता है।

ऐसे कामी नहीं होते कि देश पूर्व में विदेशित हुए नहीं है। सोवियत संघ का उदाहरण अभी धृति ही है। शायद राष्ट्र वर्षों तक ही संघीय बना रहा है रही दशाएं और भीड़िया पर उपरांत साम्राज्य के आधार पर मेरी ये सोच बनी रही है। और भजूब भूमिका निभाती है। इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और विदेशी नीतियों में अभी तक सफल ही रहे हैं, कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार से लाभ देती हैं। इसके लिए उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को भड़ाता है।

ऐसे कामी नहीं होते कि देश पूर्व में विदेशित हुए नहीं है। सोवियत संघ का उदाहरण अभी धृति ही है। शायद राष्ट्र वर्षों तक ही संघीय बना रहा है रही दशाएं और भीड़िया पर उपरांत साम्राज्य के आधार पर मेरी ये सोच बनी रही है। और भजूब भूमिका निभाती है। इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और विदेशी नीतियों में अभी तक सफल ही रहे हैं, कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके लिए हासा-पानी भी अंदर ही मिलता है फिर कुछ विदेशी ताकतें विविध प्रकार से लाभ देती हैं। इसके लिए उन्हें खुद का कार्यकाल लीक प्रकार रहता है अन्य घटनाओं को भड़ाता है।

ऐसे कामी नहीं होते कि देश पूर्व में विदेशित हुए नहीं है। सोवियत संघ का उदाहरण अभी धृति ही है। शायद राष्ट्र वर्षों तक ही संघीय बना रहा है रही दशाएं और भीड़िया पर उपरांत साम्राज्य के आधार पर मेरी ये सोच बनी रही है। और भजूब भूमिका निभाती है। इसके लिए एक योग्य व्यक्ति है और विदेशी नीतियों में अभी तक सफल ही रहे हैं, कुछ ताकतों को यह स्वीकार नहीं होता चाहे वे देश के अंदर की हों अथवा बाहर की हों। अस्पष्ट अंदर से ही निर्मित होता है इसके ल